उत्तर प्रदेश में बौद्ध पर्यटन स्थलों का विकास

* डा0 सतीश कुमार सिंह
* * रश्मि संत

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में उत्तर भारत की मध्य गंगा घाटी में अनेक धार्मिक सम्प्रदायों का उद्भव हुआ। इनमें जैन एवं बौद्ध धर्म ही सबसे अधिक प्रसिद्ध हुए।[1] उत्तर प्रदेश में ही बौद्ध धर्म का उद्गम हुआ। यद्यपि बुद्ध की जन्म स्थली वर्तमान में नेपाल में स्थित है परन्तु बुद्ध के जीवन से जुड़ी कई घटनाओं का सम्बन्ध उत्तर प्रदेश में स्थित स्थलों से रहा है। आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व बुद्ध ने जिस सत्य अहिंसा तथा समतामूलक समाज का उपदेश दिया था वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है। पर्यटन की दृष्टि से बौद्ध स्थल सदा ही महत्वपूर्ण रहे हैं। यहां भारतीय पर्यटकों के अतिरिक्त अन्य देशों से भी पर्यटकों का आगमन होता है।

बौद्ध पर्यटक स्थलों का विकास उत्तर प्रदेश में सड़कों, परिवहन के बेहतर साधनों, ठहरने के लिए होटलों में बेहतर सुविधाओं के बढ़ने के साथ–साथ हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात् पर्यटन की स्थिति में सुधार लाने की दृष्टि सरकार से वर्ष 1956 में नियोजन विभाग के अन्तर्गत पर्यटन विभाग को स्थापित किया।[2] पर्यटन के विकास हेतु एक विकास आयुक्त को नियुक्त किया गया।[3] वर्ष 1961 में प्रदेश के पर्यटन विभाग के इतिहास में महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब इसका स्थान्तरण परिवहन आयुक्त के अधीन कर दिया गया। सरकार का मानना था कि परिवहन साधनों की वृद्धि से पर्यटकों को लाने ले जाने में सुविधा होगी और इससे पर्यटक भी आकर्षित होंगे। परन्तु सरकार के इन प्रयासों से पर्यटन को पर्याप्त गति नहीं मिल पा रही थी। अतः उत्तर प्रदेश सरकार ने ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 1972 में अलग पर्यटन निदेशालय की स्थापना की।[4] प्रदेश सरकार ने उन क्षेत्रों को खोजने का प्रयास किया जिनसे पर्यटन को

* सीनियर असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इतिहास डी0एस0एन0पी0जी0 कालेज उन्नाव (उत्तर प्रदेश)
* * असिस्टेन्ट प्रोफेसर इतिहास, राजकीय डिग्री कालेज, महमूदाबाद (उत्तर प्रदेश)

बढ़ावा मिले। इन क्षेत्रों में बौद्ध स्थलों का भी उल्लेख किया गया।[5] प्रदेश में पर्यटन की लोकप्रियता बढ़ने तथा तद्नुसार पर्यटकों की संख्या में हो रही वृद्धि को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने चुने हुए यात्रा परिपथों को विकास करने का भी निर्णय लिया। इन परिपथों में बौद्ध परिपथ के निर्माण का भी निर्णय लिया गया। बौद्ध स्थलों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पर्यटन स्थलों पर चलचित्र, प्रदर्शनी, मेलों जैसे कार्यक्रम आयोजित किये गये।[6]

बौद्ध स्थलों का अपना अलग ही ऐतिहासिक महत्व था परन्तु उन्हें एक पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करना किसी चुनौती से कम नहीं था। यहां सड़क परिवहन साधनों के साथ बिजली, पानी, भोजन एवं बेहतर आवासीय सुविधाओं के उच्चीकरण एवं विस्तारीकरण की आवश्यकता थी। बौद्ध परिपथ के विकास के लिए 1989 में जापान ने 77 करोड़ रूपये स्वीकृत किये। इस धन से सड़कों का विकास पर्यटन स्थलों पर बिजली, पानी एवं लैंडस्केपिंग की जानी थी। इस योजना के अन्तर्गत 1990 से 1993 तक कार्य चला परन्तु कार्य धीमी रफ्तार से हुआ परन्तु बाद में 1996–97 तक कार्य चला। इसके पश्चात् उत्तर प्रदेश सरकार ने प्राथमिकता के आधार पर नौंवी पंचवर्षीय योजना (1997–98 से 2001–02) के अन्तर्गत 400 करोड़ रूपये का प्रावधान इस प्रोजेक्ट के लिये रखा। उत्तर प्रदेश में बौद्ध परिपथ के विकास एवं बिजली, पानी, रहने के लिये उचित व्यवस्था के लिये 2002 में एक मास्टर प्लान तैयार किया गया जिसके अनुसार 2002 की कीमतों पर (आगामी 15 वर्षों के लिये) कुल 25913.25 करोड़ रूपये खर्च करने होंगे।[8]

उत्तर प्रदेश में बौद्ध पर्यटन स्थलों पर सुविधाओं के बढ़ने के साथ देशी एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि दर्ज की गयी है। जिसका विवरण निम्न है:–

(संख्या लाख में)

क्र0सं0	स्थल का नाम	वर्ष	भारतीय	विदेशी	योग
1	कुशीनगर	1993	0.49	0.06	0.55
		1995	0.46	0.20	0.66
		2000	1.24	0.25	1.49

		2005	2.36	0.13	2.50
		2008	5.21	0.41	5.63
2.	सारनाथ	1993	0.11	1.97	2.08
		1995	0.12	2.26	2.38
		2000	3.95	2.38	6.33
		2005	5.72	2.01	7.74
		2008	6.71	2.84	9.55
3.	श्रावस्ती	1993	0.02	0.08	0.10
		1995	0.02	0.15	0.17
		2000	0.26	0.15	0.42
		2005	0.65	0.28	0.94
		2008	1.07	0.80	1.88
4.	सांकिसा	1993	0.16	0.01	0.17
		1995	0.19	0.02	0.21
		2000	0.28	0.03	0.31
		2005	0.50	0.05	0.55
		2008	0.64	0.7	0.72
5.	कौशाम्बी	1993	0.47	0.04	0.51
		1995	0.56	0.06	0.62
		2000	0.44	0.022	0.46
		2005	0.77	0.04	0.81
		2008	1.03	0.05	1.09
6.	पिपरहवा	1993	0.01	0.09	0.10
		1995	0.02	0.15	0.15
		2000	0.06	0.16	0.22
		2005	0.74	0.18	0.26
		2008	1.07	0.18	1.25

(**स्रोत**–उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग, पर्यटक सांख्यिकीय–पुस्तिका, 1995–96, 2004, 2008)

उत्तर प्रदेश में ज्यों–ज्यों पर्यटन स्थलों पर विकास कार्य होते गये उसी के परिणामस्वरूप देशी एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि दर्ज की गयी। कुशीनगर एवं सारनाथ में देशी और विदेशी पर्यटकों की संख्या सबसे अधिक दर्ज की गयी।[9] इस परिपथ के विकास के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण बात निकलकर हमारे सामने आती है कि भले ही पर्यटकों की संख्या इस परिपथ पर उतनी नहीं रहती है, जितनी अन्य स्थानों पर रहती है परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय महत्ता की दृष्टि से इसका मूल्यांकन किया जाना अधिक उचित होगा।

बौद्ध परिपथ के विकास को उत्तर प्रदेश की बहुजन समाज पार्टी की सरकार ने प्राथमिकता के आधार पर कार्य प्रारम्भ करवाया। सन् 1995 में उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री मायावती जी ने बौद्ध परिपथ के महत्व को स्वीकार करते हुए इसकी अवस्थापना सुविधाओं में सुधार लाने को प्राथमिकता दी। उत्तर प्रदेश को भारत तथा विश्व का प्रमुख तीर्थस्थल बनाने की दिशा में अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। इनमें एक निर्णय चार नये जनपदों का सृजन था जनपद थे– गौतमबुद्ध नगर, महामायानगर, श्रावस्ती और कौशाम्बी। इन चारों नगरों का गौतमबुद्ध के जीवन से गहरा सम्बन्ध रहा है।[10]

उत्तर प्रदेश में बौद्ध स्थलः–

इस परिपथ पर प्रवेश के लिये मुख्यतः दो द्वार हैं– प्रथम जो पर्यटक दिल्ली से बौद्ध परिपथ के भ्रमण के लिये आते हैं उन्हें निम्न मार्ग द्वारा यात्रा करना सुगम होगा–

दिल्ली – आगरा – संकिसा – लखनऊ – श्रावस्ती – बलरामपुर – फरेंदा – लुम्बिनी (नेपाल) – गोरखपुर – कुशीनगर – सारनाथ – बौद्धगया – नालन्दा – राजगिरि – पटना – कोलकत्ता।

दूसरा द्वार कलकत्ता से दिल्ली तक पहले रास्ते का ठीक उल्टा मार्ग है।

उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत निम्न बौद्ध स्थल आते हैंः–

1. **संकिसा** – दिल्ली से कन्नौज होते हुए यहां आया जा सकता है, साथ ही लखनऊ से भी यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है। यह स्थल फर्रूखाबाद जिले में स्थित छोटा सा गांव है जो अतीत के वैभवशाली भव्य भवनों, बौद्ध बिहारों के खण्डहरों और टीलों के ऊपर बसा है, इस स्थल की गणना बौद्ध धम्म के अट्ठमाठानांनि (बुद्ध के जीवन से जुड़े आठ प्रमुख स्थानों) में होती है।[11] भगवान बुद्ध श्रावण पूर्णिमा के दिन यहां आते थे। चीनी यात्री फाह्यान के यात्रा वृत्तान्त में संकिसा का नाम मिलता है।[12]
2. **श्रावस्ती**– वर्तमान समय में श्रावस्ती उत्तर प्रदेश का जिला है। यह स्थान कौशल महाजनपद की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध था। अब इसके खण्डहर ही शेष हैं, जो सहेठ–महेठ गांव के रूप में जाने जाते हैं। बौद्ध आचार्य बुद्ध घोष के अनुसार मूलतः सावत्थ नामक ऋषि का आवास होने के कारण इस नगर का नाम सावत्थी पड़ा। महापरिनिब्बानसुत्त में श्रावस्ती की गणना भारत के प्रमुख सात नगरों में की गयी है। अनाथपिण्डक महाउपासक ने यह जमीन 18 करोड़ स्वर्ण मुद्राएं जेत कुमार को देकर खरीदी ओर वहां सात मंजिल बौद्ध विहार बनवाया।[13] श्रावस्ती में ही भगवान बुद्ध ने अंगुलिमाल को धम्म दीक्षा प्रदान की। भगवान बुद्ध ने अपने 45 वर्षावास में 25 वर्षावास में व्यतीत किये।

पर्यटकों की सुविधा के लिये 2000–01 में यह 6.36 एकड़ भूमि पर 88.92 लाख रूपये की लागत से यात्री निवास एवं लैंडस्केपिंग का कार्य कराया गया, जिसका संचालन राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा कराया गया था। यहां 1998–99 में पुरातत्व अवशेष मार्गों पर प्रकाश की व्यवस्था एवं सहेत–महेत के पास पर्यटकों की सुविधा हेतु पार्किंग का निर्माण कराय गया।[14] श्रावस्ती में थाइलैण्ड बौद्ध धर्मावलम्बियों द्वारा विशाल भूभाग पर डेन महामोकोल मंदिर निर्माण कराया गया। बौद्ध परिपथ में श्रावस्ती को वायु सेवा से जोड़ने के लिये यहां हवाई पट्टी

का उद्घाटन 1997 में तत्कालीन मुख्यमंत्री मायावती जी ने किया।

3. **कपिलवस्तु** – वर्तमान समय में कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर में स्थित बौद्ध पर्यटन स्थल हैं जहां राजकुमार सिद्धार्थ (गौतमबुद्ध) ने अपने जीवन के आरम्भिक 29 वर्ष यहीं व्यतीत किये। यहां 1973 में पीपरहवा की खुदाई से एक मुहर मिली, जिस पर 'कपिलवस्तु' शब्द अंकित है।[15] कपिलवस्तु के निकट ही गनवरिया बौद्ध स्थल देखने योग्य है। यहां शाक्यों द्वारा निर्मित स्तूप पर्यटकों के लिये महत्वपूर्ण है। कपिलवस्तु में पर्यटन विभाग द्वारा लैण्डस्केपिंग एवं सौन्दर्यीकरण में बौद्ध हेरिटेज सेंटर, बौद्ध संग्रहालय, विपश्यना पार्क, बौद्ध कला वीथिका, पुस्तकालय केन्द्र आदि भविष्य में पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र होंगे।[16]

4. **कुशीनगर** – यह एक प्रसिद्ध बौद्ध स्थल है, जहां बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ था। जब ह्वेनसांग यहां आया तो यहां अनेक बिहार छिन्न–भिन्न अवस्था में थे।[17] यहां पर महापरिनिर्वाण नामक विशाल स्तूप विद्यमान है तथा भगवान बुद्ध लेटी हुई परिनिवृत्त अवस्था में स्थापित हैं। पुराने विहारों के खण्डहर भी दर्शनीय हैं। कुशीनगर के निर्वाण मंदिर का निर्माण भारत सरकार ने 1956 में करवाया। इस मन्दिर में बुद्ध की 6.1 मीटर ऊंची प्रस्तर प्रतिमा में बुद्ध दाई करवट पर शान्ति से लेटे हैं और उनका सिर उत्तर की ओर है, दायाँ हाथ सिर के नीचे हैं बायाँ हाथ जांघ पर रखा है।[18] यहां का माथा कुँवर मन्दिर भी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। पर्यटन विभाग द्वारा कुशीनगर में लैण्डस्केपिंग, वाटर सप्लाई, सैनीटेशन, विद्युतीकरण के साथ 1995 में यहां विमान सेवा प्रारम्भ की गयी।[19]

5. **सारनाथ** – बनारस से सारनाथ मात्र 7 मील दूर है। बौद्ध धम्म के अनुयायियों के लिये सारनाथ एक पवित्र स्थल है क्योंकि बुद्ध ने अपना पहला धम्म प्रवचन यहीं दिया था। यहां स्थित महाधम्मेक स्तूप पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र है। जीवन की दो अतियों, अतिशय भोग विलास की जिन्दगी व शरीर को अतिशय कष्ट न देकर मध्यम मार्ग का

अनुशरण करते हुए आश्टांगिक मार्ग का उपदेश बुद्ध ने यहीं दिया था। बौद्ध स्थलों में सारनाथ ही ऐसा स्थल हैं जहां भारतीय एवं विदेशी पर्यटक सबसे अधिक आते हैं। सारनाथ में म्यूजियम, अशोक स्तम्भ एवं मूंलगंधकुटी विहार अन्य महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल हैं। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग ने यहां वर्श 2002–03 में 130.48 लाख रूपये से पाथवे वर्श 2002–03 में ही 29.28 लाख रूपये की सहायता से विजिटर सेन्टर एवं पार्किंग स्थल का निर्माण करवाया। सारनाथ में 77.98 लाख रूपये की लागत से आधुनिक स्वागत केन्द्र का निर्माण हुआ जहां पर्यटकों को समस्त सुविधाएं उपलब्ध होंगी। वर्श 2002–03 में ही सारनाथ में पर्यटकों का आवागमन बढ़ाने के लिये वैशाली – नालन्दा – राजगीर – बौद्धगया – वाराणसी सर्किट डेवलपमेन्ट के अन्तर्गत घमेक चक्र प्रवर्तन पार्क का विकास किया गया।[20]

भगवान बुद्ध के प्रथम धर्मोपदेश स्थल सारनाथ में बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर बुद्ध चेतना रैली एवं दीपोत्सव का कार्यक्रम वर्ष 2007 में आयोजित किया गया। इसके पश्चात् वर्ष 2008 में बुद्ध चेतना रैली, विश्व शान्ति के लिये बौद्ध भिक्षुओं द्वारा सभा का आयोजन धामेक स्तूप परिसर में कराया गया।[21] वर्ष 2009 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बुद्ध पूर्णिमा को वृहद स्तर पर आयोजित किया जिसके लिये 8 लाख की धनराशि स्वीकृत की गयी।[22] इस अवसर पर सारनाथ में दो दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जिसमें बड़ी संख्या में भारतीय एवं विदेशी पर्यटकों ने भाग लिया। मेले, त्योहार और उत्सव जहां एक ओर मनोरंजन के साधन हैं वही दूसरी ओर स्थान विशेष की संस्कृति, इतिहास और कला की झांकी प्रस्तुत करते हैं। पर्यटकों को आकर्षित करने की श्रृंखला में बौद्ध महोत्सव भी एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

6. **कौशाम्बी**– यह बौद्ध पर्यटक स्थल इलाहाबाद से 38 किलोमीटर दूर है। भगवान बुद्ध अनेक बार कौशाम्बी आये उन्होंने बोधि–प्राप्ति के बाद नवाँ वर्षावास यहां व दसवां वर्षावास उसके निकट परिलेया में व्यतीत

किया।[23] बुद्ध तीन व्यापारियों घोशित, कुक्कुट व पावारिक के निमंत्रण पर पहली बार यहां आये। बुद्ध ने संघ के उपयोग के लिये तीन विहार घोषितराम, कुक्कुटाराम व पावारिक दान किये। यहां खुदायी में बहुत ही प्राचीन मूर्तियां मिली हैं। उत्खनन से प्राप्त पुरातात्विक अवशेष इलाहाबाद नगर स्थित संग्रहालय में देखे जा सकते हैं।

आज से लगभग 2550 वर्ष पूर्व भगवान बुद्ध ने इस धरती पर जन्म लिया और आज भी उनका महान जीवन दर्शन और शिक्षायें प्रासंगिक हैं और संसार के लिये प्रेरणा का स्रोत भी हैं। उत्तर प्रदेश उनके जीवन की चार प्रमुख घटनाओं जन्म, ज्ञान की प्राप्ति, प्रथम ज्ञान उपदेश और निर्वाण का साक्षी रहा है। यही कारण है जिसके कारण न केवल भारतीय बल्कि विश्व के अनेक बौद्ध धर्म को मानने वाले देश जैसे चीन, जापान, म्यांमार, सिंगापुर, हांगकांग, श्रीलंका थाइलैण्ड, कोरिया, ताइवान आदि से बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं।[24] उत्तर प्रदेश में बौद्ध स्थलों तक पहुंचने में अभी भी कुछ समस्यायें सामने आती हैं जैसे स्थलों का सीधे रेल मार्ग से सम्पर्क नहीं है। समय के साथ बौद्ध परिपथ का विकास हुआ है परन्तु सड़क मार्ग की अपनी सीमायें होती हैं, जिसमें समय अधिक लगता है यदि रेलमार्ग से इन स्थलों को जोड़ा जाये तो पर्यटकों की संख्या में अवश्य ही पहले से अधिक वृद्धि होगी। यद्यपि वायुमार्ग द्वारा श्रावस्ती, कुशीनगर और सारनाथ एवं बौधगया के लिये 1995 में यू0पी0 एयरवेज सुविधा प्रारम्भ की जा चुकी है।[25] इससे विदेशी पर्यटक जरूर आकर्षित हो रहे परन्तु आम भारतीय अभी भी सड़क व रेलमार्ग पर ही निर्भर है। सुदूर पूर्व दक्षिण एशिया में करोड़ों की संख्या में रहने वाले बौद्ध श्रद्धालुओं में से मात्र दो तीन लाख पर्यटक ही वर्तमान उत्तर प्रदेश बौद्ध परिपथ में आते हैं। बौद्ध परिपथ में पर्यटन से सम्बन्धित आधारभूत सुविधायें उपलब्ध न होने के कारण यहां पर्यटकों की संख्या में अपेक्षित वृद्धि नहीं हो पा रही है। कुशीनगर एवं श्रावस्ती में निजी क्षेत्र की मदद् से तीन सितारा होटल निर्माणाधीन है। वास्तव में

पर्यटन एक उद्योग है इसमें विकास की असीम सम्भावनाएं हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि इसके लिये प्रारम्भ में पूंजी निवेश के लिये संसाधन जुटाये जायें जिससे इन स्थलों पर अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बुनियादी सुविधाएं जुटायी जा सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डीएन झा और श्रीमाली, प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली, 2003, पृष्ठ 138.
2. ड्राफ्ट फाइव ईयर प्लान (1974–75 से 1977–78), पृष्ठ 199.
3. उत्तर प्रदेश वार्षिकी वर्ष 1982–83, पृष्ठ 234.
4. उत्तर प्रदेश में पर्यटन, पर्यटन सांख्यिकी, लखनऊ 1995–96.
5. दि आर्गेनाइजेशन आफ दि गवर्नमेन्ट आफ उ0प्र0, पृष्ठ 613.
6. उत्तर प्रदेश वार्षिकी, वर्ष 1989–90, पृष्ठ 672.
7. डिपार्टमेन्ट आफ टूरिज्म गोवमेन्ट आफ उत्तर प्रदेश रिपोर्ट आन मास्टर प्लान फार द बुद्धा सर्किट इन उत्तर प्रदेश 2002.
8. वही रिपोर्ट.
9. पर्यटक सांख्यिकीय पुस्तिका, उत्तर प्रदेश, 2008.
10. समतामूलक समाज की ओर यू0पी0 बौद्ध पर्यटन गाइडबुक सूचना जन सम्पर्क विभाग, लखनऊ 5.2010, पृष्ठ 9.
11. आनन्द श्रीकृष्ण गौतम बुद्ध और उनके उपदेश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ 184.
12. पी0वी0 बापट, बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष प्रकाशन विभाग, सूचना प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 1997, पृष्ठ 217.
13. आनन्द श्रीकृष्ण गौतमबुद्ध और उनके उपदेश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ 179.
14. समतामूलक समाज की ओर यू0पी0 बौद्ध पर्यटन गाइडबुक सूचना जन सम्पर्क विभाग, लखनऊ 5.2010, पृष्ठ 49.
15. पूज्य एस0 धाम्मिक, मिडल लैण्ड मिडल वे : ए पिलग्रीक्स गाइड टू

बुद्धाज इंडिया, बुद्धिस्ट पब्लिकेशन सोसाइटी, कैंडी, 1999, पृष्ठ 39 उद्धत द्वारा आनन्द श्रीकृष्ण गौतम बुद्ध और उनके उपदेश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ 191.

16. समतामूलक समाज की ओर यू0पी0 बौद्ध पर्यटन गाइडबुक सूचना जन सम्पर्क विभाग, लखनऊ 5.2010, पृष्ठ 47.
17. पीवी बापट, बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष प्रकाशन विभाग, सूचना प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 1997, पृष्ठ 271.
18. आनन्द श्रीकृष्ण गौतम बुद्ध और उनके उपदेश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ 178.
19. समतामूलक समाज की ओर यू0पी0 बौद्ध पर्यटन गाइडबुक सूचना जन सम्पर्क विभाग, लखनऊ 5.2010, पृष्ठ 47.
20. वही, पृष्ठ 52.
21. वही, पृष्ठ 55.
22. वही, पृष्ठ 55.
23. आनन्द श्रीकृष्ण गौतम बुद्ध और उनके उपदेश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ 192.
24. समतामूलक समाज की ओर यू0पी0 बौद्ध पर्यटन गाइडबुक सूचना जन सम्पर्क विभाग, लखनऊ 5.2010, पृष्ठ 56.
25. वही, पृष्ठ 59.

सन्दर्भ रिपोर्ट

1. उत्तर प्रदेश पर्यटन, पर्यटक सांख्यिकी 1995–96 पर्यटन विभाग, लखनऊ.
2. पर्यटक–सांख्यिकी पुस्तिका, 2004, उत्तर प्रदेश.
3. पर्यटक–सांख्यिकी पुस्तिका, 2008, उत्तर प्रदेश.